॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु! मेरा जीवन यज्ञमय हो।

हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान् वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का आज मेरे द्वारा न आए, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आएँ। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान् राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 583 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 658
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 56

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. महात्मा जड़भरत (मोक्ष)	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द जी महाराज	5-16
4. पवित्र राष्ट्र	पूज्यपाद-गुरुदेव	17-32
5. व्यवहार	पूज्यपाद-गुरुदेव	33-34
6. ऋषियों के उद्‌गार		35
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 6 मार्च, 2022 से 13 मार्च, 2022 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

महात्मा जड़भरत
(मोक्ष)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि वे वेद मन्त्र दिव्य हैं और उनका स्थान अपने में बड़ा अद्वितीय माना गया है और जितनी भी संसार की प्रतिभा अथवा ज्ञान और विज्ञान है वह अपने में सदैव रत्त रहा है और प्रत्येक मानव, अपने में मानवीयता को लाना चाहता है और यह विचारता रहता है कि मेरा मनस्तत्त्व एकाग्रित होकर के परमपिता परमात्मा के अनूठे क्षेत्र में प्रवेश हो जाये। परन्तु जहाँ वेद का मन्त्र साधना की प्रेरणा दे रहा है वहीं वेद मन्त्र कहता है **'यज्ञं भवि ब्रह्मणं ब्रहः'**, कि मानव को अपने में याज्ञिक बनना चाहिए। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा तो सर्वत्र याग में परणित रहने वाले हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने वेद के सम्बन्ध में नाना अन्वेषण किए और नाना प्रकार से अपने विचार देते हुए कहा है 'सम्भव ब्राह्मणः सम्भव वृत्ति देवः' कि वह परमपिता परमात्मा अनूठा है और यह संसार रूपी जो एक यज्ञशाला है यह एक महानता में गमन करती रहती है।

नाभि

बेटा! जब ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर अपने में यह विचार-विनिमय करने लगे कि यह याग क्या है तो आचार्यों ने कहा कि 'यागं ब्रह्मणं ब्रहे नाभ्याम्' यह जो याग है, यह नाभि है, यह पृथ्वी की नाभि

कहलाता है। आगे जब यह प्रश्न किया गया कि महाराज यह याग क्या है? तो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा, यह ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है। जब यह कहा गया कि 'यज्ञं भवितम्' नाना ऋषियों के मध्य में यह प्रसङ्ग आता रहा है और विद्यार्थीजन ब्रह्मचारी यह प्रश्न करते रहते थे कि भगवन्! नाभि क्या है? तो महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा, नाभि उसे कहते हैं 'मध्य भुव ब्रहे कृतम्' जो मध्य में रहने वाली है उसका नाम नाभि है। जैसे माता के शरीर में एक नाभि है और नाभि से ही सर्व-स्रोत बह रहा है। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड की नाभि पृथ्वी है और पृथ्वी के ऊपर मानव अन्वेषण करता रहता है और अन्वेषण करता हुआ नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों को मापने लगता है। मेरे प्यारे! यह पृथ्वी नाभि कहलाती है। परन्तु देखो याग ब्रह्माण्ड की नाभि है। याग उसे कहते हैं जहाँ ब्रह्माण्ड में जो भी सुक्रियाकलाप हो रहा है वह जो सुक्रियाकलाप है उसका नाम याग कहलाता है, देखो 'नाभ्याम् भवितम् ब्रह्मः' यह ब्रह्माण्ड की नाभि है और यह मानव यज्ञशाला में विद्यमान होकर के अपने में बड़ा अद्वितीय क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहा है। आचार्यों ने अपनी स्थलियों में विद्यमान होकर के याग के ऊपर अन्वेषण किया कि यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा के एक यज्ञोमयी स्वरूप का नृत्य है अथवा अपने में क्रियाकलाप हो रहा है। यह पञ्चमहाभूतों की प्रतिभा अथवा उनमें उग्रतव आने पर ही नाना प्रकार के रूपों में रचना हो जाती है और उसी रचना के आधार पर ऋषि-मुनि अपने में विचार-विमर्श करते रहे हैं।

बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है मैंने पूर्वकाल में भी इन वाक्यों के ऊपर अपना विचार दिया है। मेरे प्यारे! देखो, मैं बहुत समय से महर्षि शाकल्य मुनि की चर्चा कर रहा था। महर्षि शाकल्य मुनि महाराज ने जब महाराजा नियूष को उपदेश दिया तो महाराजा नियूष से यह कहा, "यद्गम्ब्रहा कृतम्" कि जब तुमने अपने गृह को त्यागा तो तुमने नाभि को दृष्टिपात किया? तो वह बोले प्रभु! मैंने किया है। उन्होंने कहा, नाभि क्या है? उन्होंने कहा 'यज्ञां भूतं ब्रह्मः' कि **याग ही नाभि कहलाती है।** जो मानव स्वाहा उच्चारण कर रहा है वह ब्रह्माण्ड की नाभि बन करके रहता

है। तो इसीलिए 'नाभ्याम् ब्रह्मणः' जब उन्होंने इस प्रसङ्ग को लिया तो महात्मा जड़भरत बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा प्रभु! चलो आज यहाँ से गमन करते हैं और भ्रमण करते हुए याग में परणित होंगे।

महर्षि वैशम्पायन ऋषि के आश्रम में प्रवेश

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि मानो महात्मा जड़भरत और उनके प्रियतम राजा, महाराजा नियूष उनका नामोकरण उन्होंने किया। इस नामोकरण के पश्चात् उनका नामोकरण 'मृचिका' उन्होंने निहित किया। तो महर्षि मृचिका और महात्मा भरत वहाँ से गमन करते हैं और भ्रमण करते हुए वैशम्पायन का एक आश्रम था निकटतम, उस आश्रम में पहुँचे। तो महर्षि वैशम्पायन ने उनको आसन दिया और वे विराजमान हो गए। महर्षि वैशम्पायन ने उन की आकृति, उनके नेत्रों से और उनके क्रियाकलापों से यह जान लिया कि यह तो पूर्व जन्म के शाकल्य मुनि हैं, जो मोक्ष के निकट चले गये थे और यह पुनः विवेकी बन गये हैं। उन्होंने कहा, 'चरणं ब्रह्मे कृतम्' हे ऋषिवर! अब तो आप साधक बन गए हैं पुनः से और मोक्ष के निकटतम् जाना चाहते हो, यह बड़ा हर्ष का विषय है। तो महात्मा जड़भरत ने कहा कि मैं आत्म-तत्व में अभी इतना नहीं पहुँच पाया हूँ जितना मैं पूर्वकाल में गतिवान् हो गया था। महर्षि वैशम्पायन बोले, ऐसे में तो मानो अभी देरी लगेगी, परन्तु, तुमने अपनी पगडण्डी को अपना लिया है इस पगडण्डी पर गमन करने वाला, एक समय उस स्थान पर परणित हो ही जाता है अथवा अपनी स्थिर स्थितियों में रत्त हो जाता है।

महर्षि अगस्त्य मुनि महाराज का हृदयरूपी यज्ञशाला में याग

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, हम वहाँ जाना चाहते हैं जहाँ महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार का अध्ययन होता रहता है। महर्षि वैशम्पायन बोले, चलो भगवन्! मैं भी आपके सहित गमन करना चाहता हूँ। देखो, वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया और वे भ्रमण करते हुए महर्षि अगस्त्य मुनि का आश्रम उन्हें कहीं प्राप्त हो गया तो महात्मा अगस्त्य के द्वार पर

पहुँचे। महात्मा अगस्त्य मुनि महाराज उस समय हृदय रूपी यज्ञशाला में लगे हुए थे। तब उन 'त्रि वरणं ब्रह्मः' तीनों ने ऋषि के चरणों की वन्दना की और कहा, कहो भगवन्! आप कहाँ परणित हो रहे हैं? उन्होंने कहा, मैं देखो, हृदयरूपी यज्ञशाला में याग कर रहा हूँ। उन्होंने कहा, हृदयरूपी यज्ञशाला किसे कहते हैं? उन्होंने कहा, **हृदयरूपी यज्ञशाला उसे कहते हैं जहाँ प्रत्येक इन्द्रिय के साकल्य को एकत्र किया जाता है** मानो जहाँ रसना से रसों का साकल्य और त्वचा से प्रीति का साकल्य और घ्राण-इन्द्रिय से मन्द-सुगन्ध का साकल्य और श्रोत्रों से शब्दों का साकल्य और नेत्रों से 'अमृत' रूप का साकल्य, मैं एकत्रित कर रहा हूँ और यह जब मैंने एकत्रित कर लिया है तो 'वश्यम् ब्रह्मः' इसको साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में मैं प्रवेश हो गया हूँ और मैं मानो याग कर रहा हूँ क्योंकि हृदयरूपी यज्ञशाला में, हृदय ही में तो सर्व साकल्य निहित होता है। जैसे एक मानव रूप को दृष्टिपात करता है क्योंकि नेत्रों का देवता अग्नि है और अग्नि का मौलिक गुण रूप है और उसकी स्थिति हृदय में हो जाती है। मानो शब्दः और श्रोत्र जिससे वह शब्द श्रवण किया जाता है और उसका देवता दिशायें कहलाती हैं। परन्तु सर्व दिशायें समाहित होकर के, समावेश हो करके उनका साकल्य बन करके मानो शब्द की स्थिति भी हृदय में निहित हो जाती है।

इसी प्रकार मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा, 'सम्भव ब्रवेः नेत्राणि गच्छातम्', ये जो नेत्र हैं इनका देवता अग्नि है और ये नेत्र, अग्नि के स्वरूप में, रूप को दृष्टिपात करते रहते हैं और उसकी स्थिति भी हृदय में है। अरे! रूप, रस-गन्ध इत्यादि सब ये हृदय से ही तो मानव उद्गीत गाता रहता है। आज मेरा हृदय प्रियता को प्राप्त नहीं हुआ, अन्न भी मुझे प्रिय नहीं लगा है, ऐसा मानो मन कहता रहता है। परन्तु मैंने इन पञ्चीकरण साकल्य को ले करके एकत्रित किया, उसका साकल्य बना करके उसे हृदय रूपी यज्ञशाला में मैं स्थापित करना चाहता हूँ। मानो यही प्रसङ्ग ले करके और मेरा हुत नहीं हो रहा है, उसी हुत के लिए मैं आज महर्षि उद्दालक गोत्र में प्रवेश करना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया और महर्षि अगस्त्य मुनि महाराज ने भी उनके सङ्ग ही प्रस्थान किया और कहा, महाराज, मैं भी इसे जानना चाहूँगा। तुम्हारी उत्कृष्ट इच्छा तो केवल मिलन की है और मेरे हृदय में जो ग्रन्थी लगी हुई है उसका मैं स्पष्टीकरण चाहता हूँ। महात्मा भरत मगन रहे। बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन, महर्षि मृचिका, महात्मा जड़भरत और 'मंगल वहेः कृतं देवत्वाम् ब्रह्मणे' महात्मा अगस्त्य मुनि महाराज इन सभी ने यहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए महर्षि उद्दालक गोत्र में पहुँचे। क्योंकि हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र बड़ा ही विज्ञानवेत्ताओं का माना गया है। बेटा! जहाँ भौतिक-विज्ञान और आध्यात्मिक-विज्ञान को, दोनों को मापा गया है।

महर्षि शिकामकेतु व उनकी दिव्या द्वारा ब्रह्मवेत्ताओं का स्वागत

मुनिवरो! जब वे उनके द्वार पर पहुँचे तो उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने और महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने उनके चरणों की वन्दना की, क्योंकि वे अतिथि थे और अतिथि होने के साथ ऋषि भी थे और वह ब्रह्मवेत्ता ऋषि कहलाते थे जो सदैव ब्रह्म के ऊपर ही चिन्तन करते रहते थे। देखो, जब 'अमृत' उनका स्वागत किया गया मानो कुछ कन्दमूल लाये और कन्द मूल आदि से जब उनका स्वागत किया वे बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न चित्त हो करके बोले, 'सम्भूति ब्रह्मणे वृत्तम्' हे ब्रह्मवेत्ताओं! कैसे तुम्हारा आगमन हुआ है?

हृदयरूपी यज्ञशाला में हुत साकल्य की गति

उन्होंने कहा, हे प्रभु! हम इसलिये आये हैं, हे प्रभु! मैं एक याग कर रहा हूँ और मैं हृदय के साकल्यों को तो जान गया हूँ परन्तु साकल्य जब हृदय में समाहित हो जाते हैं जब मैं उसका हुत कर लेता हूँ तो उसकी क्या गति होती है, यह भगवन्! मैं नहीं जान पाया हूँ और इसीलिए मैं आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ कि मेरे हृदय में जो ग्रन्थी लग गई है, इसका स्पष्टीकरण किया जाये। महात्मा अगस्त्य ने जब ऐसा कहा तो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि बोले, भगवन्! आप कितने समय से इनका साकल्य बना रहे हो? उन्होंने

कहा, प्रभु! मुझे बहुत समय हो गया है और मैं साकल्यों को तो जान गया हूँ जिनकी स्थिति हृदय में समाहित हो जाती है। वे हृदय का धर्म और मनोवृत्ति कहलाती है। तो हे प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ कि इसकी क्या स्थिति हो जाती है? महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने कहा, हे प्रभु! 'अमृताम् दिव्यम् ब्रह्मणे लोकां वायुः सम्भवम् ब्रह्मः वृत्तोः' हे भगवन्! हे ऋषिवर! हे ब्रह्म को जानने वाले ब्रह्मनिष्ठः हृदय की उस स्थिति के पश्चात् मानो **हृदय विवेक में जब प्रवेश हो जाता है तो हृदय का परमात्मा के हृदय से मिलान होता है।** जिज्ञासु का हृदय, एक ऋषि का हृदय और परमात्मा के हृदय का दोनों का मिलान होता है। और **वह जो स्थिति है वह चेतना और प्रकाश की स्थिति है और वह राष्ट्र की स्थिति है** क्योंकि परमात्मा का राष्ट्र सर्वभौम कहलाता है, विश्वभान कहलाता है। इसी प्रकार हम, 'मनप्रमाणं ब्रवेः' ऋषि ने कहा हम परमात्मा में स्थित हो जायें। महात्मा अगस्त्य मुनि महाराज का हृदय उनकी वार्त्ताओं से सन्तुष्ट हो गया। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! **परमात्मा के हृदय का और मानव के हृदय का जहाँ समावेश हो जाता है वहीं तो उत्पत्ति का मूल बनता है और वहीं यह जगत् अपने में स्थित हो जाता है।** तो ऐसा बेटा! ऋषि ने वर्णन किया। महात्मा अगस्त्य मुनि महाराज तो शान्त हो गये।

अमृत प्रदान करने वाली नाभि

मुनिवरो! देखो! अब महात्मा भरत ने एक प्रश्न किया कि महाराज ये जो ऋषि हैं, इन ऋषि के हृदय में एक ग्रन्थी लग गई है और एक जिज्ञासा है। महात्मा शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, हे भरत! तुम्हारे हृदय में तो कोई ग्रन्थी नहीं है क्योंकि आप तो जन्म-जन्मान्तरों में ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण करते चले आये हो। तुम्हारे हृदय में तो कोई ग्रन्थी नहीं रही है। उन्होंने कहा, नहीं प्रभु! तो उन्होंने कहा, तो तुम अपने में जिज्ञासा क्यों प्रकट कर रहे हो? जिसको जिज्ञासा हो वह मेरे से प्रश्न कर सकता है। महात्मा जड़भरत तो अपनी आत्मा में लीन हो गये और वह आत्मा का चिन्तन करने

लगे। परन्तु देखो, मृचिका ऋषि ने यह प्रश्न किया, यह जिज्ञासा प्रकट की कि प्रभु! मैं इससे पूर्वकाल में अपनी उपाधियों से अलंकृत हूँ। मेरी जो राष्ट्रीय उपाधि थी, मेरा नामोकरण महाराजा नियूष है और उन्होंने, मेरे ऋषि ने, पूज्यपाद देव ने मेरे जीवन का, शरीर का परिवर्तन किया है और उसी परिवर्तन के आधार पर मैं अपने वाक्य को उद्गीत गा रहा हूँ। उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम्! उच्चारण करो। तो उन्होंने कहा, प्रभु! मैं इनके चरणों में विद्यमान हूँ। इन्होंने मुझसे एक प्रश्न किया था कि तुम्हारी नाभि क्या है उन्होंने कहा प्रभु! मैं नाभि को जानना चाहता हूँ। शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, तुम कौन-सी नाभि को जानना चाहते हो? उन्होंने कहा कि जिस नाभि से मानव को अमृत प्राप्त होता है मैं उस नाभि को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, देखो, जिस नाभि को तुम जानना चाहते हो वह मध्य में रहती है और वह 'मध्याम् भूः वर्णम् ब्रह्मे कृतम्' मध्य में रहने वाली नाभि है। उस नाभि को जानने के लिए तुम आये हो और वह नाभि 'अमृतम्' कहलाती है उससे अमृत प्राप्त होता है। सबसे प्रथम नाभि से ही मानव का जीवन है। माता के शरीर में एक नाभि है और उस नाभि के द्वारा शिशु को रसों का स्वादन होता है बाल्य की नाभि और माता की नाभि का एक ही समन्वय रहता है तो वहाँ अमृत प्राप्त होता है। तो माता की नाभी और अपनी नाभी अपने में ही रसों का स्वादन करते रहते हैं और एक नाभि वह कहलाती है जो परमपिता परमात्मा के 'आङ्गनम्ववेः' ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है। यह जो **पृथ्वी है यह ब्रह्माण्ड की नाभि है** क्योंकि जब भी वैज्ञानिकजन अपने में गतिवान् होते हैं, परमात्मा के इस विज्ञान में रत्त होना चाहते हैं तो उसी समय 'नाभ्याम् भवितम् ब्रह्मणेः कृतम्' वे नाभि के ऊपर अन्वेषण करते हैं और विज्ञानवेत्ता जब आता है तो वह पृथ्वी को जानता है क्योंकि पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज-पदार्थ होने से ही वह नाभि बन करके यज्ञशाला कहलाती है। **यज्ञ के द्वारा ही नाना प्रकार की सुगन्धियाँ उत्पन्न होती हैं** और वह सुगन्धी ही वायु मण्डल में ऊर्जा में प्रवेश होती है और वे तरङ्गें ही पृथ्वी के गर्भ में 'नाभ्याम्ब्रहे' नाना प्रकार की

तरङ्गों में तरङ्गों का मिलन होता रहता है और वही नाभि कहलाती है जिससे मानव ज्ञान और विज्ञानवेत्ता बन जाता है और विज्ञान में रत्त हो करके अपनी आभा में रत्त हो जाता है।

मुनिवरों! आता रहता है, वेद का मन्त्र कहता है 'नाभ्याम् ब्रह्मणे'। देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, यह नाभि है **और यज्ञ की एक नाभि और है जिसे अग्नि कहते हैं** जो देवताओं की नाभि कहलाती है 'देवां भूतं देवात्वां ब्रह्मणेः' देखो, अग्नि में जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होकर के हुत करता है, अग्नि को समर्पित करता है तो यही **अग्नि बेटा! देवताओं की नाभि कहलाती है, देवताओं का मुख कहलाता है।** जैसे बाल्यकाल में नाभि के द्वारा रसोस्वादन होता रहता है इसी प्रकार बाह्य-जगत में इस नाभि से यह जो अग्नि है यह देवताओं का मुख कहलाता है। **जहाँ अग्नि है वहीं देवताओं का मुख है।** हुत कर रहा है और हुत करके ही वही देवताओं को प्राप्त होता है। जब पृथ्वी को प्राप्त होता है तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है, नाना प्रकार के व्यञ्जनों में रत्त हो जाती है और रत्त होकर के नाभि बन करके यह नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन करके देवता जागरूक हो जाते हैं और उसी देवत्व को प्राप्त होकर 'ब्रह्मणे वृत्तम्' उसी नाभि से हम ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने लगते हैं और परमात्मा के अमूल्य जगत् को दृष्टिपात करने लगते हैं।

मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह प्रकट कराना चाहता हूँ कि 'नाभ्याम् ब्रह्मणे कृतम्'। तो देखो, उस समय महाराजा नियूष की वह ग्रन्थी स्पष्टीकरण हो गई और उन्होंने कहा, उसका समन्वय नाभि से हो जाता है। परमात्मा की नाभि से उसका अमूल्य समन्वय हो करके अपने में धारयामि बन जाता है, विचारता रहता है तो 'नाभो अमृतत्' वही **परमपिता परमात्मा सर्वत्र नाभि है,** वह मानो चेतना में बद्ध है, यज्ञमयी स्वरूप है। तो देखो, 'यज्ञम् ब्रह्मः' **याग ही संसार की नाभि कहलाता है, ब्रह्माण्ड की नाभि है।** जहाँ से देखो चहुँमुखी तरङ्गें तरङ्गित हो

करके और वायुमण्डल में प्रवेश हो करके द्यौ को प्राप्त हो जाती हैं और मानव का चित्र, मानव के शब्द और मानव का जो क्रियाकलाप है वह अग्नि की धाराओं पर देवत्व को प्राप्त हो करके द्यौ में प्रवेश हो जाता है।

मोक्ष

मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने यह जब अपना निर्णय दिया तो वह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, कहो हे महात्मन् भरत! आप तो जड़भरत हैं, आप तो जड़ की भाँति रहते हैं संसार में और ब्रह्म-विद्या में लीन रहते हैं। हे प्रभु! आपकी कोई जिज्ञासा हो तो कहो? महात्मा जड़भरत ने कहा, प्रभु! मुझे जिज्ञासा नहीं होती है। मैं अपने में जिज्ञासा का समाधान कर लेता हूँ। यदि कोई होती भी है तो मैं अपने में ही समाधान कर लेता हूँ। मुझे तो प्रभु! मोह हो गया था और मोह के कारण मैं कहाँ चला गया। मैं प्रवृत्तियों में रत्त हो गया हूँ। महात्मा ने कहा, हे राजब्रहेः! हे महात्मन्! हे आत्म ब्रह्मेः! तुम तो आत्मा में लीन पुनः हो जाओगे, परमात्मा में तुम्हारी स्थिति हो जायेगी और तुम बहुत काल तक के लिये तुम कल्प-कल्पान्तरों में रमण करते हुए परमात्मा के आनन्द में पुनः चले जाओगे। ऋषि ने यह वाक्य प्रकट किया तो उनकी शंकाओं का निवारण हो गया। देखो, हृदय में जो ग्रन्थी होती है उसका स्पष्टीकरण होना बहुत अनिवार्य है। अब मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ और मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् देवः हिरण्यम् रथः विश्वा रूपम् ब्रवोः कृतः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। मानो कई समय से ऋषि की चर्चा कर रहे थे और वह चर्चा कितनी भव्य है। मानव का जीवन कहीं का कहीं चला जाता है। मानव के जीवन में नाना प्रकार के ध्रुवा और ऊर्ध्वा में गमन करने की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। आज मैं विशेषता

में नहीं जाना चाहता हूँ। जहाँ हमारी यह वाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ। क्योंकि यह जो काल है, वर्तमान का, यह वाममार्ग काल कहलाता है। वाममार्ग उसे कहता हूँ जब बहुतायत में राष्ट्र में जब वाममार्ग की प्रतिक्रिया आ जाती है तो मानवीयता का ह्रास होना प्रारम्भ हो जाता है। तो उसको हमारे यहाँ वाममार्ग कहा जाता हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला हो। इसीलिए मैं इस सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं करूँगा।

यजमान को आशीर्वाद

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे सूक्ष्म सा समय दिया, उसमें केवल यही है कि मेरा जो अन्तर्हृदय है वह यजमान के साथ रहता है। यजमान के जीवन का सौभाग्य सदैव अखण्ड बना रहे और उनके हृदय में और उनके गृह में मानो द्रव्य के सदुपयोग की प्रवृत्ति बनी रहे। जिससे गृह में उन्नति होवे और गृह उन्नत होकर के ही अपने जीवन को महान् बनाता रहे और परमपिता परमात्मा और वेद की शिक्षा और उसके ऊपर अपना आचरणीय जीवन बनाता रहे।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कैसी वेद की ग्रन्थियों के ऊपर अपने विचार देते रहते हैं। मानो जैसे ये महात्मा शाकल्य की चर्चायें तीन दिवस से प्रकट कर रहे हैं। **हमारे ऋषि-मुनियों का एक बड़ा-विचित्र मन्तव्य रहा है** कि यदि हमारे विचार में कोई वाक्य नहीं आया तो दूसरे ऋषि के द्वार पर जाओ, वहाँ उसका निर्णय करो और यदि वह वहाँ भी निर्णय न हो तो तृतीय स्थान में जाओ, वहाँ अपना निर्णय करो। यह **आध्यात्मिकवाद** कहलाता है और इस आध्यात्मिकवाद की प्रवृत्ति में मानव अपने में महान् बना रहे। तो विचार आता रहता है कि आध्यात्मिकवाद, मेरे यजमान के हृदय में प्रवेश होता रहे और द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

जीवन महान् बनाने की प्रेरणा

आज मैं विशेष चर्चा प्रकट नहीं करूँगा, क्योंकि, मुझे अपने पूज्यपाद

गुरुदेव से इतना ही वाक्य उच्चारण करना था। विचार केवल देखो, विचार तो बहुत हैं संसार में, उन विचारों में मैं पुनः से जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यही है कि हमारे जीवन में महानता की प्रवृत्ति का जन्म होता रहे और हमारा जीवन महान् बन करके इस संसार सागर से पार हो जाये। क्योंकि प्रत्येक मानव अपना उत्थान चाहता है जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रकट करा रहे थे। प्रत्येक मानव प्रकाश में रहना चाहता है, अन्धकार से दूरी होना चाहता है। राष्ट्रवेत्ता भी प्रकाश में जाना चाहता है, वह भी अन्धकार में रहना नहीं चाहता परन्तु देखो, जब स्वार्थपरता आ जाती है तो मानव में अन्धापन आ जाता है मानो वही अज्ञान में प्रवेश हो जाता है, अज्ञान आ जाता है क्योंकि जो अपनी व्यक्तिगत स्वार्थपरता है और उसमें बलवती हो जाये तो देखो वही वाममार्ग की परम्परा पर चला जाता है। तो विचार आता रहता है कि स्वार्थपरता समाप्त हो करके राष्ट्रवेत्ता अपने राष्ट्र को उन्नत बनाते रहें। यह प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य बना हुआ है और यही आभा में परणित होने के लिए तत्पर है। तो देखो, आज का विचार क्या? हम अपने देव को, अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों की वन्दना करते हुये 'जन्मान्नतनध ानब्रवेः' अपने नाना रूपों में अपने विचार देते रहते हैं जिससे हमारा जीवन नवीन होता रहता है। **मानव के विचारों से ही विचारों का परिवर्तन होता रहता है और वही महान् बना देता है।** तो यह है आज का विचार, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा और केवल मेरा यही वाक्य है कि हे यजमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, गृह में देखो द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और आयु का अपने में देखो आत्मा से घनिष्ठ समन्वय होना चाहिये। यह आज का वाक्य समाप्त। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी-अभी अपना कुछ विचार दिया। इनके विचारों में उदारता, हृदयग्राही रही है। आज का यह विचार क्या कह रहा है

कि हम अपने में याग की नाभि के ऊपर विचार करते चले जायें क्योंकि आध्यात्मिक और भौतिक याग दोनों का अपने में समन्वय हो जाता है। यह पृथ्वी नाभि है, वैज्ञानिक रूपों से मानव के शरीर में नाभि है, पालना के रूपों में और देखो यह जो नाभि ब्रह्माण्ड की है, यह ब्रह्माण्ड को जानने के लिए है और यज्ञरूपी जो नाभि इस पर विचार-विनिमय करके अग्नि को मुख मानकर और अग्नि को नाभि स्वीकार करके ही हम अपने जीवन को उन्नत बनायें। यह आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है, समय मिलेगा शेष चर्चायें कल प्रकट करेंगे।

आज का विचार यह कि वह परमपिता परमात्मा महान् है, पवित्रतम् है, महानता की वेदी पर रमण करने वाला है। यह है आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चायें कल प्रकट करूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेद पाठ.....

महर्षि महानन्द जी — अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद-गुरुदेव — आनन्दित रहो!

दिनाँक : 14 अप्रैल, 1990
समय : प्रातः 11.00 बजे
स्थान : श्री अजय शर्मा
एल.आई.सी. कालोनी,
शाहदरा, दिल्ली

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80-जी के अन्तर्गत छूट की सुविधा है।

–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

पवित्र राष्ट्र

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनुपम हैं। मानो जितना भी ये जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात् आ रहा है इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात् आ रहा है। क्योंकि वो महान् है, विज्ञान उसका आयतन माना गया है। क्योंकि जितना भी ज्ञान और विज्ञान है मानो यह उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया है। अथवा ये उसका सदन है, उसका गृह है। जितना भी आध्यात्मिक-विज्ञान है, उस आध्यात्मिक-विज्ञान में मानव रत्त होता हुआ और आध्यात्मिकवेत्ता उस आभा में परणित हो जाता है, उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में परणित हो जाता है जहाँ बेटा! आलस नहीं रहता, प्रमाद नहीं रहता। जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ रात्रि नहीं होती, वहाँ सदैव दिवस ही दिवस रहता है।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अन्त में बेटा! प्रकाश में रत्त हो जाते हैं। और जितने ये भौतिक विज्ञानवेत्ता हैं, मानो ये अपने में अनुसन्धान करते हुए और विचार-विनिमय करते हुए और क्रियात्मक परमाणुवाद को जानते हुए अन्तिम मानो चरण उनका अन्धकार का होता है। अन्धकार का क्यों होता है क्योंकि एक-एक किरणों को ये अपनी गणना में लाते रहते हैं और अपनी आत्मीयता

का उनको बोध नहीं होता। आत्मा का प्रकाश न रहने से मानो वो प्रकृति के परमाणुओं को ही अपने में ग्रहण करते रहते हैं। उनमें एक-दूसरी तरङ्गों का समन्वय करते रहते हैं। परन्तु उनका तरङ्गोंवाद होता-होता मानो देखो अन्त में वो संसार से चले जाते हैं। अपना आत्मतत्त्व कुछ होता नहीं प्रकृति के आवेशों में सदैव रत्त रहते हैं। और प्रकृति की जितनी तरङ्गें हैं, उसमें शून्यता है। मानो प्रकृतिवाद में जितनी वृत्तियाँ हैं वो मानव के पास में ही रह जाती हैं परन्तु वो मानव अपने में अधूरा ही दृष्टिपात् करता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में आध्यात्मिक या भौतिकवाद में ले जाना नहीं चाहता। आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनियों की गोष्ठियाँ होती रहती हैं। जहाँ ऋषि-मुनियों के अपने-अपने विचार मानो प्रगट होते रहते हैं। उसी आभा में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ।

विष्णु का स्वरुप

आज का हमारा वेद मन्त्रः मानो विष्णु की विवेचना कर रहा था। और विष्णु के स्वरुप में केवल इतना ही हमने पुरातन काल में भी, वर्तमान काल में भी मानो विष्णु का एक ही स्वरुप है—जो पालन करने वाला है और वो पालन करने वाला मानो सत्यता से होता है। माता यदि पालन कर रही है तो वो विष्णु है। राजा पालन कर रहा है तो विष्णु है। आचार्य अपने में पालना कर रहा है तो बेटा! वह विष्णु है। सूर्य प्रकाश देकर के पालना कर रहा है तो वो विष्णु है। चन्द्रमा अमृत बहा रहा है तो वो मानो अमृतमयी विष्णु है। विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। आत्मा का नामोकरण भी विष्णु है। तो मुनिवरो! देखो **जो भी पालन करता है उसी का नाम विष्णु है।** तो आज मैं विष्णु की विवेचना में तो जाना नहीं चाहता हूँ।

महाराजा अश्वपति के यहाँ ऋषि-मुनियों का चिन्तन

विचार केवल ये है आज मैं बेटा! तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ

जहाँ महाराजा अश्वपति के यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का आगमन हुआ और नाना ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्षों में से क्रियाओं से निवृत हो करके और मानो उसी सभा स्थली पर विद्यमान हो गए। मानो देखो नाना ऋषि-मुनियों का अपना-अपना विचार प्रगट हो रहा था। ऋषि-मुनियों की अपनी-अपनी विचारधाराएँ, अपनी शैलियाँ बड़ी विचित्र रही हैं। और वह ऋषि-मुनियों ने अपना-अपना वक्तव्य दिया। मानो किसी ने कहा कि माता को शिक्षित बनाना चाहिए ये जन-समूह पवित्र बन जाएगा। मानो यहाँ से वाक्य का प्रारम्भ हुआ—किन्हीं ने कहा कि ब्रह्मचारियों को शिक्षा लेने—वानप्रस्थ शिक्षा प्रदान करने वाला, ब्रह्मचारी अपने में आचार्य के अङ्ग-सङ्ग से वह स्वतः पवित्र और तपस्वी बन सकते हैं। तो अपनी-अपनी स्थलियों में बेटा! वाक्य बड़े प्रिय और सुन्दर थे। महाराजा अश्वपति अपने में प्रसन्न हो रहा है और देखो आचार्यों ने अपना वक्तव्य देना प्रारम्भ किया।

महात्मा कवन्धि के उद्‌गार

अब मुनिवरो! देखो इन वक्तव्यों में देने वालों में ब्रह्मचारी कवन्धि ने अपना विचार देना प्रारम्भ किया। ब्रह्मचारी कवन्धि बोले कि महाराज हम सब जो उपस्थित हुए हैं, वे इसलिए उपस्थित हुए हैं, क्या राष्ट्रवाद का कैसे कल्याण हो और ये राष्ट्र कैसे ऊँचा बने। मेरे प्यारे! देखो इसमें महात्मा कवन्धि ने अपना विचार देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा, राजा का राष्ट्र हो या साधारण प्रजा हो, क्या विद्वानों की अपनी-अपनी विचारधाराओं में नाना प्रकार की गोष्ठियाँ हों, परन्तु राष्ट्र और गृह जब तक ऊँचे नहीं बनते जब तक बुद्धिजीवी प्राणी नहीं होते और बुद्धिजीवियों के साथ में तपस्या होनी चाहिए।

बुद्धिजीवी प्राणी

बुद्धिजीवी एक तो वह होते हैं जो अक्षरों के बोधि होते हैं, अक्षरों के जानने वाले होते हैं। वे अपना विचार भी देते हैं परन्तु स्वतः अपने में

अक्षर-बोधि होते हैं। जो अपने में अक्षर-बोधि होता है और वक्तव्य देने वाला हो, उस मानव को विशेष मानो बुद्धिजीवी नहीं कहा जा सकता। एक बुद्धिजीवी वे होते हैं, जो बुद्धिजीवी मानो जो विचार देते हैं, उन विचारों को अपने जीवन में लाने का प्रयास करते हैं और विचारते-विचारते वो गम्भीर मुद्रा में परणित हो जाते हैं। मानो एक वह जितना उन्होंने अक्षरों का बोध किया है, जितना उन्होंने जाना उससे अपने जीवन को ले जाने का जो प्रयास करता है, एक बुद्धिजीवी वह प्राणी होता है। तृतीय बुद्धिजीवी वह प्राणी होता है, जो निष्पक्ष होता है, मानो वो संसार के इस वैभव से मान और अपमान से जो उपराम होता है। और वह मान और अपमान से उपराम होकर के वे मानव को, राष्ट्र को एक ऊर्ध्वा में दशा प्रदान करता है। और वह जो दशा है वह कैसी है, मानो देखो वो योगेश्वर बनाने के लिए मानो तत्पर होती है। वो राजा को भी कहता है कि तू अपने में योगी बन और प्रजा को भी कहते हैं कि तू अपने में प्रजाओं योगी बनो।

अब **योग किसे कहते हैं** बेटा! हमारे यहाँ योग की परिभाषा बड़ी-बड़ी विचित्र मानी गयी हैं। किन्हीं आचार्यों ने तो योग के सम्बन्ध में ये कहा है क्या हम **परमपिता परमात्मा और प्रकृति** का, **दोनों का समन्वय एक सूत्र में करते चले जाएँ, वो योग है।** परन्तु किन्हीं आचार्यों ने कहा क्या नहीं अपनी इन्द्रियों को संयममय बनाना है और इन्द्रियों के साकल्यों को एकत्रित करके वह अपने हृदय-रुपी यज्ञशाला में जो याग कर रहा है और याग करता-करता वो मानो देखो अपने में याज्ञिक बन जाता है उसको हमारे यहाँ योगी कहा जाता है। चतुर्थ योग-अभ्यासियों ने कहा कि नहीं, जो प्राण का निदान करता है मानो देखो जो प्राण जैसे स्वतः गति कर रहा है, इस प्राण को ब्रह्मरन्ध्र से क्या मूलाधार से लेकर के नाभि और हृदय और कण्ठ स्वाधिष्ट और मानो त्रिवेणी का जो स्नान करा करके इस मानो आत्मा को ब्रह्मरन्ध्र में ले जाता है, और ब्रह्मरन्ध्र में वो ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है। मानो जो ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है, विचारता है कि ये ब्रह्माण्ड क्या है ये मेरी माला है। और ये कैसी माला है, मानो जैसे

पूर्व काल के ऋषि-मुनियों ने कहा, क्या तीस (30) लाख पृथ्वियों की माला बना कर के जैसे सूर्य अपने में धारण कर रहा है। मानो देखो एक सहस्त्र सूर्यों की माला बना कर के बृहस्पति अपने में धारण कर रहा है। मानो देखो कहीं तक चले गए अन्त में देखो वो मौन होकर के और वो कहते हैं कि ऋतम्बावरी बनकर के इस ब्रह्माण्ड को अपनी अन्तरात्मा, मानो अपने हृदय में दृष्टिपात करें। एक वह मानो देखो वे बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं। मेरे प्यारे! देखो बुद्धिजीवी प्राणियों के कवन्धि के आधार पर मानो देखो, **ये सबसे ऊर्ध्वा में बुद्धिजीवी प्राणी है जो ब्रह्माण्ड को मानो अपने में समेट लेता है और ब्रह्माण्ड उसमें सिमट जाता है।** मानो देखो वे बुद्धिजीवी प्राणी कहलाते हैं। अब मुनिवरो! देखो निम्न कोटि के मैं तुम्हें उन बुद्धिमानों के द्वारा ले जाना चाहता हूँ। ब्रह्मचारी कवन्धि का ये वक्तव्य उन ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में प्रस्तुत होने लगा।

उन्होंने कहा कि एक बुद्धिजीवी प्राणी वह है जो अपनी स्थली पर विद्यमान होकर के याग कर रहा है, और याग करता हुआ उसमें नाना प्रकार के साकल्य अग्नि में प्रदान कर रहा है। और उन साकल्यों में से जो तरङ्गें उत्पन्न होती हैं, उन तरङ्गों को वह मानो तरङ्गित करता हुआ अपने में मानो देखो यन्त्रों का निर्माण करता है। यन्त्रों का निर्माण करता हुआ वह यन्त्रों में मानो परमाणुवाद को एक-दूसरे से समन्वय करा रहा है। समन्वय कराता हुआ जैसे अग्नि का परमाणु है उसे जल के परमाणु से समन्वय करा कर के गुरुत्त्व की उसमें पुट लगा देता है। पुट लगा कर के मानो देखो यन्त्रों का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। जब यन्त्रों का निर्माण प्रारम्भ हुआ तो मानो कोई सूर्य लोक का यान का निर्माण किया जा रहा है। कोई चन्द्रमा में जाने के लिए यान यातायात बनाया जा रहा है। मानो देखो कोई समुद्र की तरङ्गों में अपनी यातायात को बना रहा है। कोई समुद्रों की आभा में मानो देखो वह यातायात का एक वृत बना रहा है। मेरे प्यारे! देखो कोई ऐसा यात्री है, कोई ऐसा वैज्ञानिक है, मानो देखो जो अपने यन्त्र में विद्यमान होकर के उड़ान उड़ रहा है, मानो पृथ्वी की उड़ान उड़ी, पृथ्वी से देखो वह चन्द्रमा में

चले गए, चन्द्रमा से उड़ान उड़ी बुध में चले गए, बुध से उड़ान उड़ी शुक्र में चले गए। शुक्र से उड़ान उड़ी तो मानो तो वह मङ्गल में चले गए, मङ्गल से उड़ान उड़ी, तो म्रेतकेतु मण्डल में चले गए, म्रेतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी, कृतिका मण्डल में चले गए, कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी, तो वायुतकेतु मण्डल में चले गए। वायुतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो म्रहिवाचुकेतु मण्डल में चले गए, वाचु मण्डल से उड़ान उड़ी उन्होंने बेटा! वासु सम्भूति मण्डल में चले गए। सम्भूति मण्डल से उड़ान उड़ी तो प्रोती मण्डल में चले गए, प्रोती मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो अरुन्धति में चले गए, अरुन्धति से उड़ान उड़ी तो मुनिवरो! देखो तो वह वशिष्ठ में चले गए। वशिष्ठ से उड़ान उड़ी तो वह मुनिवरो! देखो जेम्केतु मण्डल में चले गए, जेम्केतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो सोमकेतु, सोमकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो वह बेटा! बहत्तर (72) लोकों का यान भ्रमण कर रहा है, और बहत्तर (72) लोकों का भ्रमण करते हुए वह यात्री अपने आश्रम में पुनः प्रवेश कर रहा है। तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में, विज्ञान के युग में नहीं, मैं बुद्धिजीवी जो प्राणी हैं उनकी गणना करा रहा हूँ जो मानो देखो महर्षि, ब्रह्मचारी कवन्धि ने ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में अपना निर्णय दिया।

उन्होंने कहा एक बुद्धिमानी, बुद्धिजीवी प्राणी वह है, एक द्वितीय बुद्धिजीवी विज्ञानवेत्ता वह है जो अपने आश्रम में विद्यमान होकर के एक-एक शब्द के ऊपर बेटा! यन्त्रों का निर्माण कर रहा है। मानो देखो एक शब्द उच्चारण हुआ और उसमें वो शब्दों की तरङ्गों को त्याग गया है। वैज्ञानिक विचारता है कि उस महापुरुष के, जो यहाँ विद्यमान रहता था उस महापुरुष के परमाणु गति कर रहे हैं, उस महापुरुष की वाणी गति कर रही है। मानो देखो ऐसे यन्त्र का निर्माण किया मुनिवरो! देखो उनके, वह मानव एक स्थली पर विद्यमान है उसके चले जाने के, प्रस्थान करने के पश्चात्, बेटा! ढाई घड़ी के पश्चात् उस मानव का चित्र यन्त्रों में प्रवेश कर रहा है। तो ये सिद्ध हुआ, क्या **मानव के जो विचार हैं, मानव के जितने तपे हुए विचार होते हैं, वो बहुत समय तक उस स्थली पर भ्रमण करते रहते हैं।** मानो देखो शब्दों

के आकार के रूप में वह और भी यन्त्रावलियों का निर्माण कर रहा है। मानो विचारता एक समय बेटा! एक वेद मन्त्र है, और वेद मन्त्र कहता है **"नमस्याम ब्रह्मे वाचो सम्भवः, लोकम् यथम ब्रह्मे माताः"** विचारता है कि माता के गर्भस्थल में मानो हम जैसे बिन्दु का निर्माण हुआ, मानो देखो निर्माण करने वाला तो प्रभु है, देवताजन् उसकी सहायता कर रहे हैं, माता अपने विचार दे रही है, मानो देखो उन विचारों से वह बाल्य पन रहा है तो शिशु को हम यन्त्रों में लाना चाहते हैं। मानो देखो एक-एक रक्त के बिन्दु से यन्त्रों का निर्माण कर रहा है, और मानव एक-एक रक्त के बिन्दु में उसी मानव का दर्शन कर रहा है जिसके वो रक्त के बिन्दु हैं। तो मेरे प्यारे! एक मानो देखो ब्रह्माण्ड मानव के समीप आ गया, विज्ञानवेत्ता के समीप एक ब्रह्माण्ड आया, क्या एक-एक रक्त के बिन्दु में मानव का चित्र है, मानो देखो हमारे यहाँ मैंने तो बहुत पुरातन काल में निर्णय किया था और मैं–ब्रह्मचारी कवन्धि ने ये कहा के मेरे जो पूज्यपाद गुरुदेव भारद्वाज, रेणावृत्ति भारद्वाज हैं, मानो देखो उनके विद्यालय में मैं अध्ययन करता रहा हूँ, और उनके विद्यालय में अध्ययन करता हुआ, ये सब वाक्य मेरे समीप भी क्रियात्मक रहे हैं, क्या जो मानो देखो हजारों-हजारों वर्ष के किसी अवसर पर कहीं किसी के रक्त का बिन्दु प्राप्त हो गया है, उसी रक्त के बिन्दु के यन्त्र में प्रवेश करने से उस मानव का चित्र भी दृष्टिपात हुआ। मानो देखो मुझे ऐसा स्मरण आता रहा है कि ब्रह्मचारी कवन्धि ने ये अपना निर्णय, अपना वक्तव्य दिया और उन्होंने कहा कि वो मानव बुद्धिजीवी है वह मानव जो आग्नेय अस्त्रों का निर्माण कर रहा है, मानो जलास्त्रों का निर्माण कर रहा है, निर्माण क्यों कर रहा है, उसका क्या स्वार्थ है? तो वो विचारता है कि इस प्रकृति की जितनी जानकारी हो जाये, हम प्रकृति में से कोई सारगर्भित मानो देखो विचारों को अपने में धारण कर सकें। उन विचारों को हम अपने में धारण करना चाहते हैं। परन्तु देखो जिससे हमारा इस संसार से उपराम हो जावे। तो मुनिवरो! देखो विज्ञानवेत्ता राष्ट्र के लिए, मानवता के लिए बेटा! ये बुद्धिजीवी प्राणियों की ब्रह्मचारी कवन्धि ने बेटा! अपनी गणना कराई।

एक बुद्धिजीवी प्राणी वह उन्होंने प्रगट किये हैं, क्या माताओं में कितनी बुद्धिजीविका होनी चाहिए, ऐसा उन्होंने देखो! विचार प्रारम्भ किया। ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा कि मेरी प्यारी माता, जब मैं माता की लोरियों का पान कर रहा था तो माता मुझे दर्शनों का अभ्यास करा रही हैं, दर्शनों की वार्त्ता कह रही हैं, योग की युक्तियाँ प्रगट कर रही हैं। और देखो विज्ञान की वार्त्ताओं में रत्त क्योंकि इससे सिद्ध हुआ क्या मेरी प्यारी माता विद्यालयों में अध्ययन कर रही हैं। विद्यालयों में अध्ययन करती-करती ये विचार देती हैं क्या मैं गृह में प्रवेश करना नहीं चाहूँगी। उन्हें कहती हैं क्या मैं गृह में जाना चाहती हूँ तो ऐसी सन्तान को मुझे जन्म देना है जिस सन्तान से मेरे जीवन का, जीवन की धारा मानो महान् और पवित्र बन जाए। मैं एक ऐसे बाल्य को जन्म देना चाहती हूँ। मानो देखो माता तपस्या कर रही है, अपने गर्भस्थल में शिशु की, शिशु को पनपा रही है और पनपा करके मानो उसे अपनी विचारधारा दे रही है, अपने क्रियाकलापों की प्रतिक्रियाएँ मुनिवरो! देखो वो उसमें परणित कर रही हैं। परणित करके मानो देखो वो बालक माता के गर्भस्थल में गर्भस्थल से पृथक होकर के लोरियों का पान करता हुआ, वही मानो देखो आगे चल करके ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता बन जाता है। तो मानो देखो एक वह माता बुद्धिजीवी है, एक वह माता अपने में बुद्धिजीवी बन रही है।

एक वह माता है जो मानो देखो अपने में योगाभ्यास बना कर के वीराङ्गना बन जाती है। वेदों का अध्ययन कर रही है मानो अपने जीवन को इतना व्यापक बना लेती है योगाभ्यास और अपनी मानो वीराङ्गना के रूपों में क्या सर्पराज आता है उससे भी वो प्यार और प्रीति कर रही है। सिंहराज आ रहा है वो भी उससे प्रीति कर रहा है। मानो देखो मृगराज आता है वो भी मानो देखो "अहिंसा परमो धर्मः" में परणित हो जाता है। **परिणाम क्या बेटा! जब तक अपने विचारों को हम उस महान् दर्शन में, मानवीय दर्शन में जब तक पिरो नहीं सकेंगे, तब तक हमारा जीवन महान् नहीं बनेगा।**

एक वह मेरी प्यारी माता बुद्धिजीवी है, वो मानो देखो विद्यालयों में जा, वो राष्ट्रवेत्ताओं के यहाँ जा-जा करके अपनी प्रतिभा का उद्‌गीत गाती रहती है और हर प्रतिभा को जानने वाले राजा अपनी स्थलियों को त्याग देते हैं। तो परिणाम क्या है, विचारों का भी मानो देखो महर्षि कवन्धि ने इन बुद्धिजीवी प्राणियों की विवेचना करते हुए ये कहा क्या यदि समाज में इस प्रकार का बुद्धिजीवी प्राणी हो जायें, इस प्रकार का बुद्धिजीवी जनसमूह बन जाये तो मानो देखो इस समाज में कुरीतियाँ नहीं रहेंगी, ये कुरीतियों से रहित समाज बन जायेगा। तो मानो ये वाक्य उच्चारण करके, मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए।

ब्रह्मचारी सुकेता की अमृत वर्षा

मेरे प्यारे! देखो इतने में ब्रह्मचारी सुकेता उपस्थित हुए और ब्रह्मचारी सुकेता ने आचार्यों की आज्ञा पा करके कहा कि मुझे कोई मानो इस समय उन्होंने कहा जो वाक्य उच्चारण किए–मुझे उच्चारण करना है, उन्होंने कहा कि हम सब जो उपस्थित हुए हैं, वो इसलिए हुए हैं क्या राजा अश्वपति की ये इच्छा है कि मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बनेगा। मानो देखो ये बुद्धिजीवी का इन तपस्वी प्राणियों में, ये बुद्धिजीवी नहीं हैं ये तपस्वी हैं। इन तपस्वी प्राणियों ने, मानो तपस्वी महापुरुषों ने अपना-अपना वक्तव्य दिया है, अपने-अपने विचार दिए हैं परन्तु देखो उन विचारों में, मैं अब उच्चारण करने के योग्य तो नहीं हूँ परन्तु इतना उच्चारण अवश्य कर सकता हूँ क्या तुम्हारे जो जितने गृह हैं, इन गृहों में क्रियात्मक रूप से प्रत्येक गृह में सुगन्धि आनी चाहिए। मानो यदि राजा के राष्ट्र को–राजा जब अपने को राजा स्वीकार करेगा और स्वाभिमान राष्ट्रीय स्तर का रहेगा तो वह अपने राष्ट्र को ऊँचा नहीं बना सकेगा। ये वाक्य मुनिवरो! देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने वर्णन किया। सुकेता ने कहा है कि हमने वेदों का बहुत स्वाध्याय किया है और वेद में ये वाक्य आया है क्या जो भी **मानव संसार में क्रियाकलाप करता है, जो भी कर्म करता है वो अपने लिए किया करता है। संसार**

का जितना भी कर्म है, जितनी भी क्रियात्मक जीवन की प्रतिक्रियाएँ हैं वो सब अपने लिए होता है। आज एक मानव सत्य उच्चारण कर रहा है और राजा बना हुआ है, वो सत्य ही सत्य उच्चारण कर रहा है तो अपने लिए सत्यवादी बन रहा है। मानो देखो इसी प्रकार वो सत्यवादी बना हुआ है, सत्यवादी बनेगा तो उसका अन्तरात्मा ऊँचा बनेगा। और तपस्वी प्राणी बन कर के अपनी तपस्या की मानो देखो आभा में, वो प्रकाश में रत्त हो जायेगा। मानो देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा राजा को, अपने को, ये ना जाने कि मैं राजा हूँ परन्तु प्रजा ये ना जाने क्या मैं प्रजा हूँ, प्रत्येक मानव अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करता चला जाए। परन्तु एक वाक्य ये है कि सबसे प्रथम राष्ट्रीयता में राजा को अपने कर्त्तव्य का पालन करना होगा। राजा जब कर्त्तव्य का पालन करेगा, तो प्रजा उसके अनुसार बरतती चली जाएगी। मानो देखो, प्रजा उसमें महानता की आभा में परणित होती चली जाएगी। जैसे विद्यालयों में हम अध्ययन करते रहे हैं–आचार्य जिस प्रतिक्रिया में रत्त होता है ब्रह्मचारी उसी में रत्त हो जाते हैं। यदि आचार्य अनुशासन में है, तो ब्रह्मचारी भी अनुशासन वृत्तियाँ बना लेते हैं। यदि देखो आचार्य चरित्रवान् और तपस्वी है, तो ब्रह्मचारी भी मानो तपस्वी और देखो वह ब्रह्मचर्य व्रत ब्रह्मवर्चोसि का पालन करने लगते हैं। मानो देखो ये वाक्य हमने दृष्टिपात किया है। हम विद्यालयों में इसका अध्ययन करते रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा क्या हे राजन्! ये सभा जो उपस्थित हुई है इसलिए हुई है क्या तुम्हारे राष्ट्र का निराकरण हो, कैसे ऊँचा तुम्हारा ये राष्ट्र बने, तो तुम तो राजा मत जानो, प्रजा अपने को प्रजा न स्वीकार करके पर अपने में मानो देखो महानता का दर्शन करती रहती है और **मानवीय दर्शन का हमें, प्रत्येक प्राणी को आभास होना चाहिए।** मेरे प्यारे! देखो विचार क्या प्रत्येक गृह में सुगन्धि आनी चाहिए। सुगन्धि का अभिप्राय ये है क्या प्रातःकालीन प्रत्येक गृह में देवपूजा हो, जिसे हम याग कहते हैं, स्वाहा की ध्वनियाँ आनी चाहिए प्रत्येक गृह में। मेरी पुत्री है, पुत्र

है, पुत्रवधु है मानो देखो मात पितर हैं, सर्वत्र एक पंक्ति में विद्यमान होकर के प्रातःकालीन याग होना चाहिए। याग में सुगन्धि आनी चाहिए और ध्वनि वेद मन्त्रों की आनी चाहिए। **जब प्रत्येक गृह से वेद ध्वनि आती रहेगी, तो मानव अपने ऋणों से उऋण होता रहेगा।** जब मानव देखो अपने ऋणों से अवऋण बनता रहता है तो मानो देखो **जब गृह में वेदों की ध्वनियाँ, स्वाहा की ध्वनियाँ, ध्वनित रहेंगी तो गृह में स्वर्ग की कल्पना करते रहते हैं, मानो वही तो स्वर्ग कहा जाता है।** ब्रह्मचारी ने कहा, ब्रह्मचारी सुकेता ने कहा क्या प्रत्येक गृह में मानो देखो चरित्र की सुगन्धि आनी चाहिए और देखो जो वार्त्ता है, वह ऐसी पवित्र होनी चाहिए मानो जिससे प्राणी, एक दूसरा प्राणी मिलकर के मुग्ध हो जाए, अपने में सार्थिकता का अनुभव करने लगे। इस प्रकार के विचार राजा के राष्ट्र में, जब इस प्रकार का नियम बना रहेगा तो प्रजा अपने कर्त्तव्य का पालन, चरित्र की प्रतिभा और विज्ञान उसका सार्थिक बन कर के रहेगा। मानो देखो राजा के राष्ट्र में जहाँ इस प्रकार के विचार होते हैं, जहाँ मानो देखो राजा के राष्ट्र में, प्रत्येक राजा के राष्ट्र में विज्ञानशाला है, विज्ञानशाला के साथ में मानवीयशाला है और मानवीयशाला के साथ में चरित्रशाला है मानो देखो वह राष्ट्र और गृह पवित्र बनते रहते हैं। यदि मानो देखो इनमें, ये राजा के राष्ट्र में ये क्रियाकलाप नहीं होता तो राजा का राष्ट्र कोई महान् नहीं, उसको राष्ट्र नहीं कहा जा सकता।

विचार-विनिमय क्या, आज का हमारा वाक्य क्या अपने क्रियाकलापों में मानव रत्त रहें और विचारधारा में परणित होते रहें, परन्तु ये विचार दे करके—राजा ने मानो देखो ब्रह्मचारी सुकेता के चरणों को स्पर्श करा और स्पर्श करके बोले कि धन्य है प्रभु! देखो, अपने स्थलियों पर वह विद्यमान हो गए। विद्यमान हो जाने के पश्चात् अब मेरे प्यारे! देखो अब सब ऋषि अपने में मौन हो गए। सब ऋषि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं और विद्यमान हो कर के मानो वे सब मौन हैं। अब मुनिवरो! देखो वह ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारियों ने अपना-अपना वक्तव्य दिया।

राजा अश्वपति की वन्दना

अब राजा के जब वाक्य आया, क्या राजा अश्वपति कोई उच्चारण कर सकता है। मेरे प्यारे! देखो उस समय महाराजा अश्वपति ने कहा क्या मैं मानो हे गुरुजनों, हे तपस्वियों, मैं इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि मैं आपके चरणों की वन्दना करने के लिए और जो मुझे आज्ञा दोगे, मैं उसका अवश्य पालन करूँगा। मानो देखो ये राजा ने इतना वाक्य कह कर के बेटा! वो अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गये।

श्वेता ऋषि से प्रार्थना

मेरे प्यारे! देखो वह और वह ब्रह्मे वर्णा मुनिवरो! देखो श्वेता, श्वेता मुनिवरो! देखो श्वेता ऋषि जो अध्यक्षता के लिए नियुक्त थे, सब ऋषि-मुनियों ने ये प्रार्थना की क्या महाराज आपका कोई विचार, अन्तिम जो विचार है वो आपका होना चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम् वह उपस्थित हुए।

श्वेता ऋषि का उद्‌बोधन

उन्होंने कहा क्या जो तुम ने अपना-अपना विचार दिया है, उन विचारों में एक महानता का और वैदिकता का मुझे एक दर्शन हो रहा है। मैं वेद के, मानो उन विचारों को अपने में अध्ययन कर रहा हूँ जिन विचारों को लेकर के मानो देखो मेरी मानवीयता और विचित्रता का दर्शन मुझे प्रत्येक ऋषि के विचारों में प्रतीत हुआ। आज मैं मानो देखो ये विचार राजा के राष्ट्र में आहार और व्यवहार की, दोनों की कुशलता केवल विचारों से ही प्रतीत होने लगती है। इन विचारों में मुझे राजा के राष्ट्र का आहार और व्यवहार दोनों में मुझे सार्थिकता प्रतीत होती है। जिस राजा के राष्ट्र में आहार और व्यवहार दोनों पवित्र होते हैं, वो राष्ट्र बुद्धिजीवी बन कर के और वह महानता का प्रदर्शन करता है। वो महानता की ज्योति को जागरूक कर देता है। तो ये महानता की ज्योति वाला एक जागरूकता का एक विचार है। मानो देखो यह

श्वेता ने कहा क्या मुझे तुमने, सबने अध्यक्ष बनाया है, मैं यह विचारता हूँ, मैं ये अनुभव कर रहा हूँ, क्या मेरे से ऊर्ध्वा में जो विचार देने वाले महान् मुझे प्रतीत हुए हैं मानो देखो उन्हें अध्यक्षता को अपनाना चाहिए, परन्तु उन्होंने अपनाया नहीं है इसलिए **मेरा विचार तो अन्तिम यही है क्या राजा के राष्ट्र को मानो देखो सहायता देना बुद्धिजीवी प्राणियों का एक धर्म होना चाहिए, मानो उनकी एक धारा होनी चाहिए। समय-समय पर राजा को सङ्केत करना ये बुद्धिजीवी, ये महान् योगियों का कर्त्तव्य होना चाहिए।** परन्तु रहा ये वाक्य क्या मेरी प्यारी माताओं का मानो देखो आदरयुक्त होना चाहिए। माता ही निर्माण करती हैं, माता ही विचार देती हैं, परन्तु बाल्यकाल में राजा के राष्ट्र में मानो दर्शनों की शिक्षाएँ, आयुर्वेद की शिक्षाएँ मेरी पुत्रियों को होनी चाहिए क्योंकि जब से मंगलम् ब्रह्मे जब इनमें आयुर्वेद विद्या होगी तो आयुर्वेद विद्या के मानो पुरुषों में आयुर्वेद विद्या जाने से, देखो आयुर्वेद के आगे जाने से भ्रष्ट होने का सन्देह बना रहता है। ये वाक्य बेटा! देखो वह वेद में कहा है, महर्षि श्वेत ने ये वाक्य क्यों कहा इसको मैं, इसका निर्णय तो नहीं दे सकता परन्तु उन्होंने जो यह अपना वाक्य कहा है कि आयुर्वेद माता के द्वार पर होना चाहिए। माता ब्रह्मचारी का निर्माण करती है और **जब प्रारम्भ का जीवन मानव का पवित्र बन जाता है तो वह रुग्ण को प्राप्त नहीं होता।** और जब प्रारम्भिक जीवन मानव का भ्रष्ट हो जाता है, प्रारम्भिक जीवन में विकृतियाँ आ जाती हैं, माता का सहयोग पवित्र नहीं होता, शिक्षा में सूक्ष्मता आ जाती है तो उस मानव का आगे चल कर के जीवन रूगणत्व में परणित हो जाता है। यदि माता को आयुर्वेद की विद्या हो तो गर्भ में माता उसी प्रकार की औषधियों का पान करे। और जब माता लोरियों का पान कराये उसी प्रकार की शिक्षा दे जिससे पुत्रियाँ और पुत्र दोनों ब्रह्मचर्यव्रत को धारण करते हुए और ब्रह्मवर्चोसि परमात्मा का चिन्तन करते हुए और मानो देखो प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए जब गति करेंगे तो वह वृद्ध तक मानव रुग्ण नहीं हो सकते। तो इसीलिए आयुर्वेद माताओं के द्वारा होना चाहिए।

आगे चल कर के जब ये पुरुषों के हृदयों में चला जाता है, तो उसमें धृष्टता आ जाती है। आयुर्वेद में धृष्टता नहीं आनी चाहिए। इसीलिए ये वाक्य कह कर, किस दृष्टि से कहा है पुत्रो! इसका मुझे ज्ञान नहीं है इतना, परन्तु मैं आगे चल कर के इसका अनुभव हो सकता है। तो विचार श्वेत ने आगे कहा कि यह माताओं की दिक्षा, शिक्षा होनी चाहिएँ और वे उनको दर्शनों की प्रतिभा, दर्शनों की भाषा में दर्शनों का अध्ययन होना चाहिए। मानव उसी के अनुसार बनता रहता है। समाज पवित्र बनता रहता है। मानो देखो राजा के राष्ट्र में कर्त्तव्यवाद की धारा प्रचलित हो जाती है और उस **कर्त्तव्यवाद की धारा में प्रत्येक प्राणी जब अपने में रत्त हो जाता है तो राष्ट्र की भी आवश्यकता नहीं रह जाती।** मेरे प्यारे! ये वाक्य उन्होंने अन्तिम कहा कि जब ऐसा समाज बन जाता है तो राष्ट्र की आवश्यकता क्या है क्योंकि राष्ट्र का तो निर्माण ही इसलिए होता है क्या वह मानो देखो अपने राष्ट्र को, प्रजा को नियम में बनाना और जो नियम में न चल सके, उसको दण्डित करने का नाम राष्ट्र का निर्माण हुआ करता है। मानो देखो **राष्ट्र का निर्माण उसी काल में होता है जब कि देखो अकर्त्तव्यवादी प्राणी हो जाते हैं।** जब अकर्त्तव्यवादियों को कर्त्तव्यवाद में लाने के लिए राजा के यहाँ सेना होती है, राजा के यहाँ मानो देखो नाना प्रकार के दण्डित प्राणी होते हैं। इसी प्रकार वेद के ऋषियों ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा, कि राष्ट्र इतना महान् होना चाहिए, मानव देखो अपने कर्तव्यों का पालन करे तो वहाँ राष्ट्र की आवश्यकता केवल इतनी रहती है जब वो प्रजा को– अकर्त्तव्यवादी को जैसे ब्रह्मवेत्ता, देखो जैसे विद्यालय में आचार्य प्रातःकालीन याग करता हुआ ब्रह्मचारियों को अनुशासन में लाने का प्रयास करता है, उसी प्रकार राजा भी एक आचार्य की भाँति मानो वो भी प्रजा को समय-समय पर देखो वो सभाओं में जाता हुआ अपना उपदेश देता रहे जिससे प्रजा अपने कर्त्तव्य को अपने से दूरी न कर सके। ऐसा मानो देखो ये राष्ट्र मेरे प्यारे! देखो श्वेत ने उच्चारण किया और श्वेत ने कहा कि राजा पालन करे, राजा के यहाँ अपना अन्न इतना पवित्र हो।

बेटा! महाराजा अश्वपति के यहाँ मुनिवरो! राजा और उनकी पत्नी, दोनों देखो वो कृषि उद्योग करते थे, उद् गम करते थे और उद् गम से जो अन्न उत्पन्न होता उसे पान करते और गऊ को मानो अपने भुजों से उसकी अर्चना करते, उसके उदर की देखो जब वह दुग्धाहार कराती उसे वह पान करते, और मुनिवरो! देखो वह उसी से व्रत इत्यादियों का देखो ग्रहण करके मानो देखो राष्ट्र को अपना विचार देते थे। राष्ट्र को अपनी प्रतिभा प्रदान करते थे। बेटा! महाराज अश्वपति के जीवन में विज्ञान मानो ज्ञान और योग और बुद्धिजीवी प्राणी–मुनिवरो! देखो विचार ये आया–श्वेत ने ये कहा जिस राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं, और निष्पक्ष होते हैं, मानो देखो उतना ही प्रजा उनकी बनती है, उतना राजा का राष्ट्र पवित्र बना करता है। और जो मानो देखो वह घृणात्मक बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं, घृणात्मक जितने बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं वे राष्ट्र का विनाश कर देते हैं। तो इसलिए बुद्धिजीवी प्राणियों में घृणा नहीं होनी चाहिए। **बुद्धिजीवी वह होता है जो मानो देखो वह तपस्या करने वाला हो। इन्द्रियों पे विजय करने वाला हो वह मानव बुद्धिजीवी बन करके राष्ट्र को ऊँचा बनाता रहेगा।** ये वाक्य क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते रहें। मेरे प्यारे! देखो आज का विचार हमें ये प्रेरणा दे रहा है कि हम अपने में कितने ऊँचे बने। तो बेटा! देखो श्वेत ने अपना वक्तव्य देकर के और वे मौन हो गए।

महाराजा अश्वपति द्वारा आश्वासन

मेरे प्यारे! महाराजा अश्वपति ने ये मानो देखो आज्ञा पाकर के ऋषि की, उन्होंने स्वीकार किया, क्या मेरे विद्यालय में आचार्य इस प्रकार के वानप्रस्थी होंगे और मेरे यहाँ मेरी प्यारी माताओं को आयुर्वेद की शिक्षा भी उनके द्वारा होगी। इस प्रकार का तब मानो उच्चारण करके और ऋषि के चरणों की वन्दना करके राजा अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए।

ऋषियों का अन्तिम विचार

विचार क्या मुनिवरो! देखो वह ब्रह्मवेत्ताओं की सभा मुनिवरो! देखो

विसर्जित हो गई और ब्रह्मवेत्ताओं ने भी अपना वक्तव्य दिया है, वह बड़ा विचित्र है। ब्रह्मचारी कवन्धि ने जो अपना विचार दिया वह बुद्धिजीवी प्राणियों का वह बड़ा विचित्र है। मुनिवरो! देखो अन्तिम ये ऋषि कह करके कि यह संसार एक प्रकार की माला है और इस माला को एक दूसरा प्राणी अपने में धारण कर रहा है। लोक-लोकान्तर एक दूसरे की माला बना करके उसे सहायता प्रदान कर रहा है, इन्हीं विचारों को लेकर के बेटा! राष्ट्र, समाज, प्रजाओं के लिए कृतियों का जन्म होता है।

मुनिवरो! देखो ये वाक्य आज का हमारा क्या कह रहा है–हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और मुनिवरो! देखो अपने में, अपने में कितने महान् बने, हम कैसे विष्णु बन करके बेटा! हम पालन करने वाले बने। मेरे प्यारे! देखो हे विष्णु तू कल्याण करता है, तू पालन कर रहा है, बेटा! देखो जो भी पालन करता है उसी का नामोंकरण विष्णु की प्रतिभा में, विष्णु की गोद में बेटा! देखो उसको निर्धारित किया गया है।

आज का विचार अब हमारा ये क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, बेटा! हम परमपिता परमात्मा के इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। **हम मानो देखो ज्ञानयुक्त होकर के हम परमपिता परमात्मा की मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करें।** जिस प्रभु के राष्ट्र में बेटा! अन्धकार नहीं होता, आलस नहीं होता, प्रमाद नहीं होता, रात्रि नहीं होती वहाँ सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है.....

–शेष अनुपलब्ध

दिनाँक : 19 मार्च, 1986
समय : दोपहर 2:30 बजे
स्थान : श्री फेरू सिंह
ग्राम लूम्ब, मेरठ

।। ओ३म् ।।

व्यवहार

हमारे यहाँ कुछ विचार-विनिमय होता रहता है। वेद का मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है क्योंकि हमारे वैदिक साहित्य में, **वेद के मन्त्रार्थ में तीन प्रकार की प्रतिभा मानी गई है।** एक व्यवहार है, दूसरा विज्ञान है और तृतीय आध्यात्मिकवाद है। सबसे प्रथम हम अपने व्यवहार में इतने कुशल हो जाएँ; हमारा व्यवहार किसके प्रति क्या-क्या है ऐसा हम अपने में विचारते चले जाएँ। जैसे मातृ है, पितर हैं, आचार्यजन हैं, राष्ट्रवाद है, सभी के प्रति हमारा व्यवहार जैसे भी व्यवस्था समय अनुकूल हो वैसा ही वह व्यवहार करना चाहिए। परन्तु जब मानव का व्यावहारिक जीवन व्यवस्थित हो जाता है व्यवहार में कुशलता आ जाती है। अपने गृह में वास करते हुए अपना व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिससे गृह में स्वर्ग आ जाए। जब व्यवहार में कटुता रहेगी, गृह में मानो नम्रता नहीं रहेगी तो गृह नारकीय बन जाते हैं। इसीलिए वेद का मन्त्र यह कहता है यस्वाम् ब्रव्हे वृत्तम् गृहः, **मानव का व्यवहारिक जीवन पवित्र होना चाहिए।** राष्ट्र के प्रति हम अपने में सहानुभूति करते हुए अपने को न्यौछावर करते चले जाएँ। तो मुनिवरों! देखो जैसा भी अनुकूल हो, वातावरण के अनुकूल हमारा व्यवहार पवित्र होना चाहिए। हम आचार्यों के समीप विद्यमान होते हैं तो आचार्यों के प्रति हमारी कैसी सहानुभूति होनी चाहिए, हमारा कैसा परस्पर व्यवहार होना चाहिए। परन्तु जब सहपाठियों में विराजमान होते हैं वहाँ अपनी मनोनीत विचारधाराएँ प्रायः प्रगट की जाती हैं वहाँ भी व्यवहार मानवीयत्व में होना चाहिए।

इसी प्रकार जब हम योग के क्षेत्र में जाते हैं तो हमारे यहाँ सर्वप्रथम योग का एक शब्द यह कहता है कि हमें अनुशासन में रहना चाहिए। देखो, अनुशासन की चर्चाएँ हमारे यहाँ यौगिक आचार्यों ने वर्णन की हैं। जब यह

प्रश्न किया गया वेद मन्त्रों में कि हम मानव ब्रव्हे वृतहा, **अनुशासन का नाम योग माना गया है और योग का नाम अनुशासन है।** यहाँ अनुशासन का अभिप्रायः यह कि यह व्यवहारिक है। हमारी प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है जैसे हमारी रसना में रस है नाना पदार्थों के रसों को अनुभूत कराने वाली रसना है। मानो परमाणुवाद को सुगन्ध दुर्गन्ध में वायु अमृतम् घ्राण का सम्बन्ध पृथ्वी से होता हुआ वह सुगन्ध कहलाता है। वह घ्राण का साकल्य है परन्तु श्रोत्रों का शब्द है अन्तरिक्ष उसका देवता माना गया है। वह देवेत्व को प्राप्त हो करके शब्दों को ग्रहण कर रहा है, शब्दों में अपनी सहानुभूति नियुक्त कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो वह शब्दम् ब्रह्माः वह उस शब्द को लेकर के रूपम् ब्रह्माः यह रूप हमारी इन्द्रियों में समाहित हो रहा है मानो देखो चक्षुओं में समाहित हो रहा है। अग्नि उसका देवता माना गया है, त्वचा में सर्वत्र प्रीति समाई हुई है जिसका देवता वायु कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! ये ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। **ज्ञानेन्द्रियों को अनुशासन में लाने का नाम वैदिक आचार्यों ने योग कहा है।** इसीलिए हमें योग में समर्पित होने के लिए भी व्यवहार की आवश्यकता है, गम्भीर मुद्रा में अनुशासन की आवश्यकता है। देखो सबसे प्रथम हमारा बाह्य जगत का व्यवहार पवित्रतम् होना चाहिए।

पूज्यपाद-गुरुदेव

दिनाँक : 30 सितम्बर, 1988

आवश्यक सूचना

सभी वार्षिक सदस्यों को सूचित किया जाता है कि जिन सदस्यों ने अभी तक वार्षिक सदस्यता की राशि जमा नहीं की है वह कृपया करके मनीआर्डर द्वारा समिति के कार्यालय में या प्रकाशन मंत्री को वार्षिक सदस्यता की राशि भेज दें जिससे कि पत्रिका निरंतर प्रेषित होती रहे।

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार में किसी वस्तु का अभाव नहीं होता परन्तु उसका रूपान्तर होता रहता है।
2. ब्रह्मचारी वह होता है जो ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करता है, ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय करता है।
3. भगवान् कृष्ण का आत्मा ही मनु जी का आत्मा था।
4. धर्म और मानवता की रक्षा करना राष्ट्र का परम उद्देश्य है।
5. राष्ट्र में जो दुग्ध देने वाला पशु है उसी से मानव की बुद्धि ऊँची बनती है, मानव की बुद्धि में ऊर्ध्वागति आती है।
6. महान् आत्मा कदापि भी ऊँचे-ऊँचे गृहों में जन्म नहीं लेती है।
7. राजा के राष्ट्र में धर्म और मानवता की रक्षा होनी चाहिए।
8. जिस मार्ग को अपनाना चाहते हो उस पर हमारा चिन्तन होना चाहिए, निध्यासन होना चाहिए।
9. चार अरब बत्तीस करोड़ कुछ वर्षों की सृष्टि की अवस्था होती है।
10. कर्त्तव्यवाद प्रथम है और मोह, ममता उसके पश्चात् रहती है।
11. भगवान् राम बारह कलाओं को जानते थे और भगवान् कृष्ण षोडश कलाओं को जानते थे।
12. षोडश कलाओं को जानने से संसार की प्रत्येक वस्तु को, परमाणु को अच्छी प्रकार जान सकते हैं।
13. मानव के साथ में तीन प्रकार के कर्म होते हैं–क्रियात्मक, सञ्चित और प्रारब्ध।
14. प्रकृति उसी प्राणी की साथी बनती है जो मानव अपनी मृत्यु का स्मरण करता है।
15. महापुरुषों को काल नहीं ले जाता है।
16. धर्म नाम विचार का है।
17. धर्म उसी को कहते हैं कि जो वस्तु हमें स्वयं को कष्टमय प्रतीत होती है वह दूसरों के लिए भी इसी प्रकार की है।

।।ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर आदित्य

श्रीमति विनेश त्यागी धर्मपत्नी श्री श्रीपाल त्यागी जी निवासी संजयनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने चिरन्जीव सुपौत्र प्रिय आदित्य त्यागी सुपुत्र श्रीमति ज्योति त्यागी व मनीष त्यागी के नवें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग प्रकाशन कार्य के लिए बड़ी उदारता व नम्र भाव से पूज्यपाद-गुरुदेव के श्री चरण कमलों में अर्पित किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री त्यागी जी के पिताजी भी पूज्यपाद-गुरुदेव जी के अनन्य भक्त थे और उन्हीं की शिक्षा को अपने जीवन में अपनाते हुए श्री त्यागी जी प्रकाशन के कार्य के लिए समय-समय पर अनुदान प्रदान करते रहते हैं और गाँधीधाम समिति लाक्षागृह, बरनावा में भी निरन्तर यागों के शुभ अवसर पर अपनी आहुति देने में अग्रणीय रहते हैं। अपने परिवार में भी प्रति वर्ष यज्ञ कराते हुए अपने परिवार के जीवन को वैदिक परम्परा से सम्पन्न बनाते हुए अपने सम्बन्धी मित्रों को भी निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं। याग की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में गाजियाबाद नगर में भी सामूहिक यज्ञ का आयोजन अपने मित्रों एवम् सम्बन्धियों के सहयोग से प्रति वर्ष कराने में अग्रणीय रहते हैं।

ऐसे वैदिक परम्परा से सम्पन्न परिवार को धन्यवाद प्रगट करते हुए समिति उनके सुपौत्र के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर बारम्बार शुभकामनाएँ प्रगट करती है। और परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।।ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

आयुष्मति अवन्ती और अन्वेषिका

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभाशिर्वाद से श्रीमति राजकुमारी त्यागी धर्मपत्नी श्री यतेन्द्र त्यागी निवासी ग्राम चिरथावल जिला मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ने अपनी पौत्री आयुष्मति अवन्ती के पञ्चम् व पौत्री आयुष्मति अन्वेषिका के द्वितीय जन्मदिन के शुभागमन पर वैदिकता से सम्पन्न परिवार ने 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को बल प्रदान करने के लिए अर्पित किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

कन्या की माता श्रीमति ऋचा त्यागी एवम् पिता डॉ. आलोक त्यागी जी निवासी राजनगर एक्सटेंशन द्वारा वैदिक परम्परा की सम्पन्नता का निर्वाह परिवार पूर्वजों की शिक्षा के रूप में निरन्तर चला आ रहा है और उसको और अधिक पवित्रता से सम्पन्न करने का सौभाग्य माता श्रीमति ऋचा त्यागी को अपने बाबा श्री कालूराम त्यागी जी व माता-पिता श्रीमति रश्मि त्यागी एवम् श्री गुरुवचन शास्त्री जी की छत्रछाया में धरोहर के रूप में बाल्यकाल से प्राप्त होता रहा है। विदुषी माताएँ ही श्रेष्ठ सन्तान को राष्ट्र को अर्पित करने में पुरातनकाल से अग्रणीय रही हैं।

सौभाग्यशाली सुपौत्रियों को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए समिति ईश्वर से कामना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपनी प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी जी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्री त्यागी जी व उनकी धर्मपत्नि प्रतिदिन प्रभात बेला में दैनिक अग्निहोत्र काफी लम्बे समय से करते चले आ रहे हैं और उसके पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों का स्वाध्याय भी निरन्तर करते हुए अपनी स्थिति को ऊर्ध्वागति प्रदान करने में संलग्न हैं। इसके साथ-साथ प्रत्येक रविवार को अपने गृह पर एक डॉ. साहब की निशुल्क सेवा में सभी आने वाले मरीजों को अपनी तरफ से फ्री दवाईयों का वितरण करते हुए अपनी प्रवृत्तियों को मानव कल्याण के लिए एक साकार रूप का दर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह परिवार बड़ी उदारता से धार्मिक कार्यों में अपना सहयोग सभी क्षेत्रों में बनाए हुए हैं और विशेषकर पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के कार्यों में श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत और वैदिक अनुसन्धान समिति, दिल्ली को निरन्तर तन, मन व धन से सहयोग करने में संलग्न हैं।

श्रदालु परिवार के सभी सदस्यों का पुनः से आभार प्रकट करते हुए समिति पौत्र के जन्मदिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष, मो. न. : 9810887207
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	50.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पँचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर, कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की जो अनुपम देन है, वह जो अनुपम प्रकाश है उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे महाप्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 583
नवम्बर 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-11-2021
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 583
नवम्बर 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-11-2021
Published on 5th day of the same month